By :- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

किन परिस्थिति मे आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ ?

प्रथम अंग्रेज-मराठा युद्ध

1. 18 मई, 1775 ई० का युद्ध - सूरत की संधि का शर्त के अनुसार, बम्बई की सरकार ने एक शक्तिशाली सेना रघुनाथराव की सहायता के लिए पूना की ओर भेज दी। 18 मई 1775 ई० को अंग्रेजों और मराठों के मध्य युद्ध हुआ जिसमे मराठे पराजित हुए। परन्तु इसी समय कोलकाता कौंसिल ने इस मामले मे हस्तक्षेप करते हुए सूरत की संधि को रद्ध कर दिया। रेगुलेटिंग एक्ट के अनुसार इस प्रकार की संधियाँ कलकत्ता से आज्ञा प्राप्त करके ही की जा सकती थी। इस संधि को रद्ध तथा युद्ध बन्द करने के कारण यह था कि अंग्रेज उस समय मराठों से लम्बे संघर्ष मे उलझना नहीं चाहते थे और उनके पास इसके लिए पर्याप्त धन भी नहीं था।

2. पुरन्दर की संधि :- मार्च (1776) सूरत की संधि को रद्द करने के पश्चात् कलकत्ता कौंसिल ने अपना एक प्रतिनिधि पूना सरकार के पास भेजा। मार्च 1776 को नाना फड़नवीस के साथ अंग्रेजों ने पुरन्दर की संधि करली। इस संधि की शर्तों के अनुसार यह निश्चित हुआ कि सालसेट टापू अंग्रेजों के अधिकार में ही रहेगा और भड़ौंच के क्षेत्र के राजस्व का कुछ भाग भी अंग्रेजों को प्राप्त होता ही रहेगा। मराठों ने क्षतिपूर्ति के रूप में अंग्रेजों को 12 लाख रुपये देना स्वीकार किया तथा अंग्रेजों ने वादा किया की वे रघुनाथराव की सहायता नहीं करेंगे। उसकी सेना भंग कर दी जाएगी और उसे पेंशन देकर गुजरात भेज दिया जाएगा।

3. तेलगाँव का युद्ध और बड़गाँव की संधि :-

पुरन्दर की संधि की शर्तों का पालन न तो अंग्रेज ने किया और न ही मराठा ने। गुजरात भेजने के बजाय बम्बई की अंग्रेजी सरकार ने रघुनाथराव को अपने यहाँ शरण दे दी। इधर इंग्लैंड में कंपनी के डायरेक्टर्स ने कलकता कौंसिल द्वारा की गई पुरन्दर की संधि को अस्वीकार करते हुए बम्बई की सरकार का समर्थन किया। उस समय अमेरिका का स्वतंत्रता का युद्ध छिड़ चुका था और फ्रांस ने अंग्रेजों के विरुद्ध अमेरिका से संधि कर ली थी। 1778 ई० में मराठों ने पूना में फ्रांसीसी राजदूत का स्वागत किया जिससे अंग्रेज चिढ़ गये।

इस प्रकार दोनों ही पक्ष संधि को तोड़ने के लिए उताव थे। अतः दोनों में पुनः युद्ध छिड़ गया। बम्बई सरकार ने रघुनाथराव को पेशवा घोषित कर दिया और तब अंग्रेजी सेना ने मराठों पर आक्रमण कर दिया। उस समय तक मराठों ने भी युद्ध की पूरी तैयारी कर ली थी। 1779 ई० में तेलगाँव के युद्ध में मराठों ने अंग्रेजों को बुरी तरह परास्त किया।

चारों ओर से घिरे हुए अंग्रेजों को मराठों से पराजित होकर विजनवरी 1779 ई० को बड़गाँव की अपमानजनक संधि करनी पड़ी जिसके अनुसार यह तय हुआ कि 1773 ई० के बाद अंग्रेजों द्वारा जीते गये सभी मराठा प्रदेश मराठों को लौटा दिये जाएँगे जो अंग्रेजी सेना बंगाल से महाराष्ट्र की ओर आ रही थी।